اٰيَاتُهَا ٣ ❀ سُوْرَةُ الْعَصْرِ (١٠٣) ❀ رُكُوْعُهَا ١

आयात 3 — (103) सूरतुल अ़स्र — ज़माना — रुकुअ़ 1

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

وَالْعَصْرِ ۙ ١ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَفِىْ خُسْرٍ ۙ ٢ اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

जो लोग ईमान लाए	सिवाए	2	ख़सारा	में	इन्सान	बेशक	1	ज़माने की क़सम

وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَتَوَاصَوْا بِالْحَقِّ ۙ وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ ٣ ع — ١ ع ٣ ٢٨

3	सब्र की	और वसीयत की	हक़ की	और एक दूसरे को वसीयत की	और उन्हों ने अ़मल किए नेक

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है
ज़माने की क़सम, (1)
बेशक इन्सान ख़सारे में है, (2)
सिवाए उन लोगों के जो ईमान लाए और उन्हों ने नेक अ़मल किए और एक दूसरे को हक़ की वसीयत की और सब्र की वसीयत (तलक़ीन) की। (3)

اٰيَاتُهَا ٩ ❀ سُوْرَةُ الْهُمَزَةِ (١٠٤) ❀ رُكُوْعُهَا ١

आयात 9 — (104) सूरतुल हुमाज़ा — ताना ज़न — रुकुअ़ 1

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

وَيْلٌ لِّكُلِّ هُمَزَةٍ لُّمَزَةِ ۙ ١ الَّذِىْ جَمَعَ مَالًا وَّعَدَّدَهٗ ۙ ٢

2	उसे गिन गिन कर रखा	माल	जमा किया	जिस	1	ऐब जू	ताना ज़न	वास्ते - हर	ख़राबी

يَحْسَبُ اَنَّ مَالَهٗۤ اَخْلَدَهٗ ۚ ٣ كَلَّا لَيُنْۢبَذَنَّ فِى الْحُطَمَةِ ۖ ٤ وَمَاۤ

और क्या	4	"हुत्मा"	में	ज़रूर डाला जाएगा	हरगिज़ नहीं	3	उसे हमेशा रखेगा	उस का माल	कि	वह गुमान करता है

اَدْرٰىكَ مَا الْحُطَمَةُ ؕ ٥ نَارُ اللّٰهِ الْمُوْقَدَةُ ۙ ٦ الَّتِىْ تَطَّلِعُ عَلَى

पर	जा पहुँचे वह	जो कि	6	भड़काई हुई	अल्लाह की आग	5	"हुत्मा" क्या है?	तुम समझे

الْاَفْـِٕدَةِ ؕ ٧ اِنَّهَا عَلَيْهِمْ مُّؤْصَدَةٌ ۙ ٨ فِىْ عَمَدٍ مُّمَدَّدَةٍ ٩ ع — ١ ع ٩ ٢٩

9	लम्बे लम्बे	सुतून	में	8	बन्द की हुई	उन पर	बेशक वह	7	दिल (जमा)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है
ख़राबी है हर ताना ज़न ऐब लगाने वाले के लिए, (1)
जिस ने माल जमा किया और उसे गिन गिन कर रखा, (2)
वह गुमान करता है कि उस का माल उसे हमेशा रखेगा, (3)
हरगिज़ नहीं, वह ज़रूर "हुत्मा" में डाला जाएगा। (4)
और तुम क्या समझे कि "हुत्मा" क्या है? (5)
अल्लाह की आग भड़काई हुई, (6)
जो दिलों तक जा पहुँचेगी। (7)
बेशक वह उन पर ढांक कर बन्द करदी जाएगी। (8)
लम्बे लम्बे सुतूनों में। (9)

اٰيَاتُهَا ٥ ❀ سُوْرَةُ الْفِيْلِ (١٠٥) ❀ رُكُوْعُهَا ١

आयात 5 — (105) सूरतुल फ़ील — हाथी — रुकुअ़ 1

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

اَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِاَصْحٰبِ الْفِيْلِ ؕ ١ اَلَمْ يَجْعَلْ

कर दिया उस ने	क्या नहीं	1	हाथी वालों के साथ	तुम्हारा रब	किया	कैसा	क्या तुम ने नहीं देखा

كَيْدَهُمْ فِىْ تَضْلِيْلٍ ۙ ٢ وَّاَرْسَلَ عَلَيْهِمْ طَيْرًا اَبَابِيْلَ ۙ ٣

3	झुंड के झुंड	परिन्दे	उन पर	और भेजे	2	गुमराही में (बेकार)	उन का दाओ

تَرْمِيْهِمْ بِحِجَارَةٍ مِّنْ سِجِّيْلٍ ۙ ٤ فَجَعَلَهُمْ كَعَصْفٍ مَّاْكُوْلٍ ٥ ع — ١ ع ٥ ٣٠

5	खाए हुए	भूसे की तरह	पस उन को कर दिया	4	संगे गिल	से	कंकरियां	फेंकते थे

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है
क्या आप (स) ने नहीं देखा कि आप के रब ने क्या सुलूक किया हाथी वालों से? (1)
क्या उन का दाओ नहीं कर दिया बेकार? (2)
और उन पर झुंड के झुंड परिन्दे भेजे (3)
वह उन पर कंकरियां फेंकते थे पकी हुई मिट्टी की। (4)
पस उन को खाए हुए भूसे के मानिंद कर दिया। (5)